

पाठ 20 – अध्याय 20 निष्कर्ष

जैसे-जैसे हम दस आज्ञाओं के अध्ययन में आगे बढ़ते हैं, हम अंततः अधिक विवादास्पद भागों से आगे बढ़ जाते हैं और ऐसे क्षेत्रों में पहुँच जाते हैं जो थोड़ा अधिक आरामदायक हैं।

तो, आप आराम कर सकते हैं।

पुनः पढ़ें निर्गमन 20:12

पाँचवाँ वचन बच्चों को अपने माता-पिता के प्रति उचित सम्मान दिखाने और उनकी उचित देखभाल करने का आदेश देता है। यह हमें यह भी बताता है कि हमें इस सिद्धांत का पालन क्यों करना चाहिए: ताकि इस देश में हमारे दिन लंबे हो सकें। अब, आपके अनुवाद के आधार पर, आप कह सकते हैं, ठीक है, यह वास्तव में यहूदी है, क्योंकि जब परमेश्वर “भूमि” कहता है तो वह स्पष्ट रूप से इस्राएल की भूमि का उल्लेख कर रहा है और, निश्चित रूप से यहाँ अर्थ का एक पहलू है, लेकिन, जैसा कि हम अब (उम्मीद है) समझ रहे हैं, कि भले ही यहोवा ने मूसा की वाचा में इस्राएल को ये सिद्धांत दिए थे, लेकिन ये सिद्धांत सिर्फ इस्राएल के लिए नहीं हैं; वास्तव में वे इस बारे में हैं कि परमेश्वर द्वारा बनाया गया ब्रह्मांड कैसे संचालित होना चाहिए। इस बात को और स्पष्ट करने के लिए, ये वे सिद्धांत हैं जिनके अनुसार छुड़ाए गए मनुष्यों को जीना है। हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि इस्राएल परमेश्वर की कृपा से, **सभी** मानवजाति के लिए परमेश्वर के वचन का प्राप्तकर्ता और रक्षक होने के लिए चुना गया था, सिर्फ अपने लिए नहीं।

यहाँ 12वें पद में भूमि के लिए इब्रानी में प्रयुक्त शब्द अदामा है और, हाँ, यह पहले सृजित मनुष्य, आदम के नाम से संबंधित है। ज्यादातर बार अदामा का अर्थ केवल पृथ्वी होता है, जैसे मिट्टी, या जमीन, गंदगी, लेकिन इसका अर्थ पृथ्वी भी हो सकता है जैसे कि हमारा ग्रह। कभी-कभी इसका अनुवाद देश या भूमि में किया गया है, (जैसे कि कनान की भूमि में), लेकिन इससे हमें वास्तव में अर्थ की गलत धारणा मिलती है। उदाहरण के लिए, जब बाइबिल हमें बताती है कि मूसा पवित्र भूमि पर खड़ा था, तो इब्रानी में वह पवित्र अदामा पर खड़ा था। विचार यह है कि, आम तौर पर, अदामा को किसी विशिष्ट क्षेत्र या देश के संदर्भ के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए। अक्सर हम बाइबिल में इस्राएलियों को इस्राएल की भूमि को केवल “भूमि के रूप में संदर्भित करते हुए देखेंगे। लेकिन उस उदाहरण में एक पूरी तरह से अलग इब्रानी शब्द का उपयोग किया गया है: एरेटज़।

मैं यह दर्शाने की कोशिश कर रहा हूँ कि यहोवा कह रहा है कि हम अपने माता-पिता के साथ वैसा ही प्यार, सम्मान और देखभाल से पेश आएँगे जैसा परमेश्वर हमसे उम्मीद करता है, तभी हम धरती पर लंबे और भरपूर जीवन का आशीर्वाद प्राप्त करेंगे। दरअसल, यह हमारा कर्तव्य है।

इस सिद्धांत का एक कारण यह है कि मानवजाति के लिए प्रभु की योजना में परिवार की केन्द्रीयता है। परिवार की स्थिरता उस अधिकार संरचना के उचित पालन से बनी रहती है जिसे परमेश्वर ने परिवारों के लिए

स्थापित किया है, जिसमें माता-पिता उस पदानुक्रम में सबसे ऊपर होते हैं। इस आदेश का उल्लंघन परिवार को विघटित कर देता है, समाज के मानदंड के रूप में इस आदेश का उल्लंघन **राष्ट्रीय** विघटन लाता है। यहजेकेल की पुस्तक (22:7) में यहजेकेल परिवार के टूटने को उन प्रमुख कारणों में से एक के रूप में दोषी ठहराता है जिसके कारण प्रभु ने यहूदा को बेबीलोन में निर्वासित होने दिया।

पुनः पढ़ें निर्गमन 20:13

छठा वचन, मनुष्यों की हत्या के विरुद्ध निषेध है लेकिन, इस आशा को जिस संकीर्ण अर्थ में लिया जाना चाहिए, उसे समझने के लिए, “हत्या” शब्द को रेखांकित करें। यह आज्ञा हत्या के सामान्य अर्थ के बारे में नहीं है। इब्रानी में यहाँ इस्तेमाल किया गया शब्द “रत्सच” है। यह **अन्यायपूर्ण** हत्या और केवल अन्यायपूर्ण हत्या को संदर्भित करता है। चाहे जानबूझकर या अनजाने में। इसका अर्थ पूरी तरह से वैध न्यायिक सजा को पूरा करने के रूप में “निष्पादित” करना नहीं है। इसका अर्थ युद्ध में दुश्मन को मारना या अपने या किसी अन्य के बचाव में घुसपैटिए को मारना नहीं है। हत्या शब्द रत्साच का बहुत अच्छा अनुवाद है, और जिस तरह से आज की पश्चिमी दुनिया हत्या या मानव वध के बारे में सोचती है, ठीक वैसा ही इस पद का इरादा है।

अब अगला सवाल यह है कि किसी इंसान की हत्या न्यायपूर्ण बनाम अन्यायपूर्ण है? खैर, यह उन कई विषयों में से एक है, जिसकी व्याख्या यहोवा, अध्याय 21 से शुरू करने जा रहा है जो आगे आने वाले नियमों और अध्यादेशों में है। जिसे आम तौर पर कानून के रूप में संदर्भित किया जाता है, इब्रानी नागरिक संहिता के 613 कानून। हम इस पर चर्चा करेंगे जब हम इस पर पहुँचेंगे।

हत्या के विषय में बात यह है कि परमेश्वर कहता है कि केवल उसे ही मानव जीवन लेने का अधिकार है।

हालाँकि, तोरह ने विशेष रूप से मानव सरकार को इस अपराध के आरोपी व्यक्ति के अपराध या निर्दोषता का निर्धारण करने का कार्य दिया है, और वह खून की सज़ा के लिए खून निकालने का कार्य सौंपता है। उत्पत्ति 9 में इस गतिशीलता को मृत्युदंड के लिए परमेश्वर के तर्क के रूप में स्थापित किया गया है: “जो कोई किसी मनुष्य का खून बहाता है, उसका खून भी मनुष्य ही बहाएगा। किसी मनुष्य की अन्यायपूर्ण हत्या इतनी गंभीर क्यों है? फिर से उत्पत्ति 9 में हमें बताया गया है, “परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी छवि में बनाया।” मनुष्य परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है इसलिए किसी मनुष्य की हत्या बहुत गंभीर है और परमेश्वर के न्याय के लिए अंतिम दंड की आवश्यकता होती है।

विडंबना यह है कि जैसे-जैसे इतिहास आगे बढ़ता है, मानव जाति खुद को अधिक सभ्य और मानवीय समझती है, और इसलिए अधिकांश समाजों ने अब मृत्युदंड को समाप्त कर दिया है। यह परमेश्वर के नियमों और सिद्धांतों के खिलाफ एक सीधा विद्रोह है और वास्तव में परमेश्वर की न्याय प्रणाली के अनुसार हत्यारे की जान न लेने से मानव जीवन सस्ता हो जाता है। मैं एक बात स्पष्ट कर दूँ: बाइबिल मनुष्य को हत्यारे की मौत की सजा को कम करने की बिल्कुल भी छूट नहीं देती है।

लेकिन मृत्यु दंड को कारावास में बदलने (या यहाँ तक कि पीड़ित परिवार को फिरौती का भुगतान करने) या मृत्यु दंड को पूरी तरह से समाप्त करने की यह प्रथा कोई आधुनिक घटना नहीं है, द्वितीय मंदिर काल के दौरान (उसी समय यीशु जीवित थे) सैनहेड्रिन द्वारा मृत्यु दंड लगाया जाना दुर्लभ था। ईसाई हलकों में यह कहना प्रचलित है कि ऐसा इसलिए था क्योंकि रोमनों ने यहूदियों से मृत्यु दंड देने का अधिकार छीन लिया था, लेकिन यह बहुत सरल है। वास्तविकता में अभिलेखों से पता चलता है कि यहूदी न्यायालय को केवल स्थानीय रोमन प्राधिकरण के पास जाकर किसी अपराध के लिए अपना निर्णय देना होता था, रोमन गवर्नर मामले की समीक्षा करता था और जब तक कि उसे कोई गंभीर आपत्ति न हो (और जैसा कि हम यीशु की फाँसी के मामले में देखते हैं, कभी-कभी इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि उसे कोई गंभीर आपत्ति थी), रोमन इसे मंजूरी देते थे और फिर यहूदी धार्मिक अधिकारियों के लिए मृत्यु दंड देते थे। दूसरे शब्दों में, यहूदी मृत्यु दंड देने का आदेश देने में पूरी तरह सक्षम थे, बस रोमनों को निर्णय पर सहमत होना था और दंड देने के लिए एजेंट बनना था।

यहूदियों ने लंबे समय से यह तय कर रखा था कि दया ही बेहतर रास्ता है और अक्सर हत्यारों की मौत की सज़ा कम कर दी जाती थी। मिश्राह ट्रैक्टेट मकोट में हम एक कथन पाते हैं कि सैनहेड्रिन की राय थी कि हर 7 साल में एक बार भी मौत की सज़ा सुनाना बहुत ज़्यादा है। उस कथन पर टिप्पणी करने वाले एक रब्बी (रब्बी बेन अजरिया) कहते हैं कि 70 साल में एक बार भी बहुत ज़्यादा है। रब्बी अकीवा कहते हैं कि अगर वे सैनहेड्रिन में होते तो वे किसी भी परिस्थिति में किसी भी मौत की सज़ा की अनुमति नहीं देते।

रब्बी गमलिएल ने इस विकृत मानसिकता का जवाब दिया कि अगर सैनहेड्रिन ने उन सबसे कट्टरपंथी रब्बियों के दृष्टिकोण को अपनाया होता और कभी भी मृत्युदंड नहीं दिया होता, तो इस्राएल में निर्दोष लोगों के खून की मात्रा नाटकीय रूप से बढ़ गई होती। क्या यह वहीं नहीं है जो हमने अमेरिका में देखा है जहाँ कई राज्यों में मृत्युदंड को समाप्त कर दिया गया है और कानूनी व्यवस्था ने इसे उन राज्यों में लगभग असंभव बना दिया है जहाँ इसकी अनुमति है? मृत्युदंड को कम करने से रक्तपात कम नहीं हुआ है, बल्कि बढ़ गया है।

प्रभु का सिद्धांत यह है कि एक हत्यारे का जीवन लेना वास्तव में एक निर्दोष व्यक्ति के जीवन की रक्षा करना है।

पुनः पढ़ें निर्गमन 20:14

अब आपके संस्करण के आधार पर 7वीं आज्ञा या तो पद 14 है या यह पद 13 का हिस्सा है।

सातवाँ वचन कि विवाहित व्यक्ति को व्यभिचार नहीं करना चाहिए। अब, जबकि हम इस पर गहराई से चर्चा नहीं करेंगे (हालाँकि हमें शायद करना चाहिए), मैं इस आज्ञा के बारे में थोड़ी बात करना चाहता हूँ, क्योंकि यह एक परमेश्वर-सिद्धांत स्थापित करता है जिसे हममें से अधिकांश लोग पूरी तरह से नहीं समझते हैं। समझने वाली पहली बात यह है कि व्यभिचार की पूरी अवधारणा, परिभाषा के अनुसार, केवल विवाह की संस्था के भीतर ही होती है। विवाह के बाहर, व्यभिचार का कोई अर्थ नहीं है और, विवाह न केवल मानवजाति के लिए परमेश्वर

की योजना का एक महत्वपूर्ण तत्व है, बल्कि यह मानवजाति के साथ परमेश्वर के रिश्ते में एक भूमिका निभाता है।

विवाह की पूरी अवधारणा यह है कि एक "मिलन" होता है, जहाँ तक मानव-से-मानव संबंधों की बात है, शास्त्रों के अनुसार, यह विवाह मिलन एक पुरुष और एक महिला के बीच होता है। जबकि हम अक्सर विवाह को एक शारीरिक या यौन मामले के रूप में या हमारे अमेरिकी समाज में एक वित्तीय या कानूनी मामले के रूप में सोचते हैं, वास्तव में परमेश्वर 7वें आदेश में जिस मिलन की बात कर रहे हैं वह मुख्य रूप से एक आध्यात्मिक मिलन है। निश्चित रूप से, वर्तमान दुनिया में विवाह के भौतिक पहलू मौजूद हैं, और इसका कम से कम कारण मानव जाति का प्रचार-प्रसार नहीं है लेकिन यह बहुत दूर के भविष्य में समाप्त नहीं होगा। मैं ऐसा इसलिए कहता हूँ, क्योंकि यहोवा के दृष्टिकोण से, व्यभिचार का पाप एक पति या पत्नी द्वारा अपने विवाह के बाहर शारीरिक यौन संबंध बनाने से कम है, जितना कि हमारी आत्माओं द्वारा किसी अन्य के साथ अनधिकृत मिलन में प्रवेश करने से है। परमेश्वर ने अधिकृत किया है कि एक पुरुष और एक महिला, उसके सामने, आपस में हर स्तर पर मिलन के लिए जुड़े रह सकते हैं; लेकिन केवल अपने बीच। उस विवाह के भीतर एकमात्र अन्य मिलन की अनुमति परमेश्वर के साथ, मसीह के माध्यम से है (कोई यह तर्क दे सकता है कि एक प्रकार का तीसरा मिलन भी अनुमत है, जो विवाहित जोड़े और मसीह के शरीर, सच्चे चर्च के बीच है लेकिन, वह मिलन बिल्कुल वही बात नहीं है, यही कारण है कि इसे मिलन के रूप में नहीं, बल्कि एकता के रूप में कहा जाता है)।

आपने शायद गौर किया होगा कि बाइबिल में मसीह के साथ हमारे मिलन के बारे में अक्सर विवाह संबंधी शब्दावली का इस्तेमाल किया जाता है; और उस विवाह संबंधी शब्दावली का इस्तेमाल न तो कोई सादृश्य है और न ही यह कोई उदाहरण है। यह बिल्कुल वास्तविक है, और इस तथ्य से हमें इस बात के बारे में ज़्यादा जागरूक होने में भी मदद मिलनी चाहिए कि कैसे हमें यहोवा के दृष्टिकोण से विवाह के सार पर विचार करना है, और हमें मसीह के साथ अपने रिश्ते की प्रकृति पर कैसे विचार करना है। जिस तरह सांसारिक विवाह एक पुरुष और एक महिला का एक दूसरे के साथ एकता में आना है, उसी तरह उद्धार हमारा मसीह के साथ एकता में होना है।

अब मैं इसे थोड़ा और विस्तार से बताता हूँ। भविष्य में एक शानदार विवाह भोज होने जा रहा है, जिसे अक्सर मेम्ने का विवाह भोज कहा जाता है, जिसमें मसीह की दुल्हन, चर्च (अर्थात् सभी विश्वासी), उसके साथ विवाह में प्रवेश करेंगे। यह हमें बताता है कि भले ही हम उसके प्रभुत्व को स्वीकार करने के तुरंत बाद मसीह के साथ एक हो जाते हैं (यानी, जब हम बच जाते हैं), हम अभी भी उसके साथ एक औपचारिक और पूर्ण विवाह जैसी एकता में पूरी तरह से नहीं हैं। इसलिए मसीह के साथ हमारा मिलन और एकता किसी दिन इस वर्तमान युग के अंत में आज की तुलना में और भी अधिक पूर्ण हो जाएगी। पहले तो यह कथन दोहरी बात लग सकती है।

ऐसा कैसे हो सकता है कि हम अभी शादीशुदा तो हैं लेकिन यीशु से नहीं, जबकि शादी बाद में पूरी तरह से पूरी हो जाएगी? हालाँकि यह अवधारणा हमें थोड़ी परेशान कर सकती है, लेकिन मसीह के दिनों के इब्रानियों के लिए यह बिल्कुल सही थी क्योंकि आज की तरह जहाँ शादी के लिए पहले सगाई होती है, वास्तविक विवाह

समारोह से पहले सगाई होती है, वैसा ही तब भी था। उस समय सगाई के साथ, सगाई होने पर आज की तुलना में कहीं अधिक गंभीर और ठोस प्रतिज्ञा जुड़ा होता था। जैसे-जैसे सही परिस्थिति आएगी, हम इब्रानी विवाह के सभी औपचारिक पहलुओं का गहराई से अध्ययन करेंगे, जो न केवल दिलचस्प हैं बल्कि काफी शिक्षाप्रद भी हैं। अभी के लिए बस इतना समझिए कि सगाई के समय एक इब्रानी पुरुष और महिला के साथ ऐसा व्यवहार किया जाता था मानो वे विवाहित हों, यानी, एक हद तक मिलन सगाई के बाद शुरू हुआ। एक चेथुबाह, एक कानूनी विवाह अनुबंध, तैयार किया जाता था और उस पर सहमति होती थी और यह सगाई के तुरंत बाद प्रभावी हो जाता था; और एक सगाईशुदा जोड़ा औपचारिक कानूनी तलाक के आदेश के बिना सगाई से अलग नहीं हो सकता था। सगाई के दौरान बेवफाई को व्यभिचार माना जाता था, सगाई के बाद महिला की संपत्ति भी उसके मंगेतर की मानी जाती थी, जब तक कि वह उस पर अधिकार न छोड़ दे। सगाई के बाद शादी को 100 प्रतिशत पूरा करने के लिए जो कुछ बचा था, वह था विवाह की पूर्णता, शारीरिक मिलन, जो औपचारिक विवाह भोज के बाद होता था।

हम जो मसीह के हैं, वर्तमान में उसके साथ सगाई की स्थिति में हैं। हम विवाह की प्रक्रिया में हैं। अभी, मसीह आत्मा में हमारे साथ है, और इसलिए हम आत्मा में उसके साथ एकता में हैं, लेकिन मेमने के विवाह पर्व पर वह व्यक्तिगत रूप से हमारे साथ होगा, और इसलिए हम व्यक्तिगत रूप से उसके साथ एकता में होंगे। इसलिए मसीह के साथ हमारी वर्तमान, सांसारिक सगाई के समय में भी, हमारे लिए किसी ऐसी चीज़ के साथ एकता में आना जो निषिद्ध है, हमारे लिए मसीह के प्रति बेवफाई की स्थिति में आना, हमें यहोवा की नज़र में मसीह के साथ हमारे रिश्ते में व्यभिचार की स्थिति में डालता है।

नए यूनानी शब्द “मोइचोस” (मोय-कोस) जिसका आम तौर पर सही अनुवाद “व्यभिचार” होता है, को पुराने इब्रानी अर्थ में समझना चाहिए ताकि हम पूरी तरह से समझ सकें कि परमेश्वर हमें व्यभिचार के बारे में क्या बता रहा है। जब इब्रानियों ने व्यभिचार की बात की, तो उनका मतलब अपने साथी के प्रति विश्वासघात था। व्यभिचार माने जाने के लिए किसी दूसरे के साथ यौन संबंध बनाने का खुला कार्य होना ज़रूरी नहीं था, हालाँकि अक्सर ऐसा ही होता था। व्यभिचार क्या होता है, और इसके लिए उचित सबूत और दंड, समय के साथ काफी बदल गए। कुलपतियों के समय में, व्यभिचार के लिए पत्नी को किसी दूसरे पुरुष के साथ यौन संबंध बनाने की आवश्यकता होती थी। पति के संदेह के अलावा किसी अन्य सबूत की आवश्यकता नहीं थी, और वह खुद उसे मौत की सज़ा दे सकता था। मूसा के कानून ने दोषसिद्धि के लिए कम से कम दो गवाहों की आवश्यकता को लाया। मसीह के समय तक बहुत सारे सबूतों की आवश्यकता थी, एक अदालत इस मामले पर फैसला सुनाती थी, और मृत्यु अभी भी संभावित दंडों में से एक थी, लेकिन अधिक बार किसी तरह का सार्वजनिक अपमान सबसे बड़ा दंड था।

मसीह के कुछ समय बाद ही, व्यभिचार के पाप के लिए मृत्यु दंड हटा दिया गया क्योंकि यह इतना प्रचलित हो गया था कि पुलिस के लिए इसे रोकना लगभग असंभव था और जिन महिलाओं को मृत्युदंड दिया जाता था उनकी गिनती इतनी अधिक थी कि मृत्यु दंड को लागू करना असंभव था। सभी बाइबिल काल के

दौरान, व्यभिचार को विशुद्ध रूप से महिला अपराध और पाप माना जाता था पुरुष इसके अधीन नहीं थे। बेशक, मसीह ने स्पष्ट किया कि यह निश्चित रूप से परमेश्वर का दृष्टिकोण नहीं था और व्यवस्था में हम देखते हैं कि पुरुष और महिलाएँ समान परिणाम के अधीन थे।

बाइबिल के समय में किसी महिला का अपने साथी के प्रति विश्वासघात करना, जैसे कि किसी दूसरे पुरुष के साथ दोस्ती करना या अपने पति के खिलाफ असहमति में किसी दूसरे पुरुष का पक्ष लेना, कभी-कभी व्यभिचार माना जाता था। इसलिए व्यभिचार, जहाँ तक परमेश्वर का सवाल है, आध्यात्मिक स्तर पर यहोवा के प्रति व्यक्ति की अविश्वास की व्यापक भावना को अपने साथ लेकर चलता है; और यहाँ तक कि इस अविश्वास में अपने साथ किसी दूसरे व्यक्ति को भी शामिल करने का विचार भी शामिल है, क्योंकि टैंगो के लिए दो लोगों की ज़रूरत होती है, है न?

बात यह है कि मानवजाति के लिए कुछ ऐसे मिलन उपलब्ध हैं, जिनमें प्रवेश करना हमारे लिए वर्जित है, खासकर यदि हम मसीह के साथ भी मिलन में रहना चाहते हैं। दूसरे शब्दों में, कुछ मिलन ऐसे हैं जो परस्पर अनन्य हैं। शास्त्र बताते हैं कि मूल रूप से हम किसके साथ मिलन में हैं, यह परिभाषित करता है कि परमेश्वर हमें किस रूप में देखता है। तो एक स्पष्ट उदाहरण यह होगा कि यदि हम शैतान के साथ आध्यात्मिक मिलन में आते हैं, तो हम मसीह के साथ भी आध्यात्मिक मिलन में नहीं हो सकते... ये दोनों मिलन परस्पर अनन्य हैं। अन्य निषिद्ध मिलन भी हैं, वे सभी विनाशकारी हैं, और संत पौलुस 1 कुरि 6 में उनकी सूची प्रदान करता है, लेकिन हमारा उद्देश्य यह नहीं है, इसलिए हम उनमें से प्रत्येक से निपटेंगे नहीं। मुद्दा यह है कि परमेश्वर के दृष्टिकोण से मसीह के साथ हमारा मिलन मानव विवाह में हमारे मिलन के सबसे समान है। इसलिए, **मसीह के साथ मिलन** में रहते हुए एक आस्तिक के लिए निषिद्ध मिलन में शामिल होना, या पति या पत्नी के लिए अपने विवाह के बाहर मिलन में प्रवेश करना, बाइबिल दोनों के लिए एक ही शब्द का उपयोग करेगी "व्यभिचार"। इसलिए, हमें इस विशेष पाप की गंभीर प्रकृति को उससे कहीं अधिक व्यापक संदर्भ में समझने की आवश्यकता है जितना हम आमतौर पर सोचते हैं।

अब, मुझे यकीन है कि यहाँ कुछ लोग तलाक और पुनर्विवाह के आधुनिक "व्यभिचार" पहलुओं के बारे में थोड़ी चर्चा करना चाहेंगे। मुझे वास्तव में नहीं लगता कि यह इसके लिए उपयुक्त सबक है, लेकिन मैं इसके बारे में बस कुछ संक्षिप्त टिप्पणियों करना चाहूँगा। सबसे पहले, व्यभिचार करना, चाहे जीवनसाथी के प्रति बेवफ़ाई करके हो, या शायद (आपके धर्मशास्त्र के आधार पर) तलाक लेकर फिर से शादी करके, दोनों ही मामलों में अक्षम्य पाप नहीं है। ऐसा कोई पाप नहीं है जो हम कर सकते हैं और जिसकी कीमत यीशु ने पहले ही नहीं चुकाई है। और, कृपया यह भी समझें कि बाइबिल में व्यभिचार की स्थिति के सामान्य अर्थ में, इसका संबंध एक विवाहित महिला से था जो अपने पति के अलावा किसी अन्य पुरुष के साथ रहती थी, जिसे समाज द्वारा नीची नज़र से देखा जाता था। यानी, उसने कभी कानूनी तलाक नहीं लिया था, आम तौर पर इसलिए क्योंकि उसे तलाक देना या न देना पति का विशेषाधिकार था। दूसरी ओर, पुरुष आम तौर पर अपनी पत्नियों को दूसरी महिला के साथ रहने के उद्देश्य से तलाक देते थे, यानी, वे बस उस महिला से ऊब गए थे जो उनकी पत्नी थी

और दूसरी की तलाश कर रहे थे। जबकि यह उन दिनों सामाजिक रूप से स्वीकार्य था, यह यहोवा को स्वीकार्य नहीं था, और यीशु ने इस पर विस्तार से बात की, यह स्पष्ट करने की कोशिश की।

दूसरा, बाइबिल तलाक और पुनर्विवाह के मामले में बहुत संघर्ष करती है। पौलुस इस मामले से निपटने के लिए काफी आगे जाता है, और इसके लिए कुछ दिशा-निर्देश प्रदान करता है।.. जिनमें से कुछ के बारे में वह कहता है कि यह मसीह की ओर से है, बाकी उसकी निजी राय है। फिर भी, वह (और यीशु) यह स्पष्ट करते हैं कि तलाक और पुनर्विवाह के मुद्दे को संबोधित करने का कारण यह है कि यहोवा मानव जाति के दिल की वर्तमान कठोरता से अच्छी तरह वाकिफ है, और जबकि वह किसी भी तरह से तलाक को माफ नहीं कर रहा है। उसने ऐसी व्यवस्था की है कि यदि हमारा विवाह खतरे में पड़ जाए तो हम और अधिक पाप न करें। देखिये, यह वह संदर्भ है जिसमें पौलुस ने यह बयान दिया कि कैसे कुछ मायनों में बेहतर है कि, यदि आप कर सकें, तो विवाहित न हों। क्योंकि यह एक ऐसी पहेली है जिसका सामना मानवजाति की वर्तमान भ्रष्ट स्थिति कर रही है, जिसमें अकेले लोग ब्रह्मचारी रहने में असमर्थ हो सकते हैं (व्यभिचार से वचने के लिए), फिर भी विवाहित लोग एक-दूसरे के प्रति वफादार रहने में असमर्थ हो सकते हैं (व्यभिचार से वचने के लिए), या यहाँ तक कि विवाहित रहने के लिए पर्याप्त शांति प्राप्त करने के लिए पर्याप्त रूप से साथ रहने में भी सक्षम नहीं हो सकते हैं।

और, दोनों ही मामलों में, जब हम असफल होते हैं, तो इसका असर यहोवा के साथ हमारे रिश्ते पर पड़ता है, जिसके बारे में पौलुस बहुत चिंतित है। इस संबंध में आज हम जिन समस्याओं का सामना कर रहे हैं। वे मसीह के दिनों से अलग नहीं हैं।

और, अंत में, हमें इस सब में परमेश्वर की कृपा देखनी चाहिए। परमेश्वर के लिए, यह मत सोचिए कि यदि आप तलाकशुदा हैं और अब दोबारा शादी कर रहे हैं तो आप एक अनधिकृत विवाह में हैं और, परमेश्वर के साथ सही होने के लिए, आपको इसे समाप्त कर देना चाहिए। क्या यह पाप था जिसने हमें पहले स्थान पर उस स्थिति में डाल दिया? ओह, हाँ।

और, यही बात मसीह और पौलुस दोनों कह रहे थे क्योंकि बहुत से तलाकशुदा, खास तौर पर पुरुष, तलाक पर कोई पछतावा महसूस नहीं करते। उनका विचार था कि मूसा के नियमों (और कुछ बाद की परंपराओं) के तहत जोड़ों के तलाक के लिए कानूनी प्रक्रियाएँ स्थापित की गई थीं, इसलिए अगर वे ईमानदारी से उन कानूनी प्रक्रियाओं का पालन करते तो यहोवा के लिए सब ठीक था।

गलत। यदि आप तलाकशुदा हैं और दोबारा शादी कर चुके हैं, तो क्या आपने इसके लिए और इसके लिए जो कुछ भी हुआ उसके लिए परमेश्वर से माफ़ी माँगी है? यदि आपने ऐसा किया है, तो उसकी माफ़ी स्वीकार करें, और उस अपराध के लिए मसीह द्वारा आपकी ओर से किए गए पूर्ण भुगतान को स्वीकार करें, और आपको एक नया मिलन देकर उनके द्वारा दिखाए गए अद्भुत दया के लिए कृतज्ञता के साथ आगे बढ़ें, जिसके भीतर आप पुरुषों और महिलाओं के तरीके से काम कर सकते हैं और काम करने के लिए बनाए गए थे, भले ही उनका इरादा यह था कि हमें मूल मिलन के अलावा किसी और की ज़रूरत नहीं होनी चाहिए। यार, यह परमेश्वर का प्यार है। इसलिए हमें मसीह की ज़रूरत है।

निष्कर्ष यह है कि सतह पर हम व्यभिचार को शरीर का मामला मानते हैं, जो कि निश्चित रूप से है, लेकिन वास्तव में यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण आध्यात्मिक मुद्दा भी है। यहाँ फिर से वहीं द्वंद्व है, भौतिक और आध्यात्मिक एक साथ मौजूद हैं और व्यभिचार पूरी तरह से निषिद्ध "संभोग" के इर्द-गिर्द घूमता है। इसलिए हमें यह स्पष्ट होना चाहिए कि यह 7 वीं आज्ञा न केवल हमारे मानवीय विवाह संबंधों से संबंधित है, बल्कि यहोवा और विशेष रूप से यीशुआ के साथ हमारे संबंधों से भी संबंधित है, जिसके साथ हर विश्वासी की सगाई होती है।

पुनः पढ़ें निर्गमन 20:15

यह एक और है जो आपकी बाइबिल में पद 13 के रूप में दिखाई दे सकता है। चोरी के बारे में 8वाँ वचन बहुत सीधा है, इसलिए यहाँ इस पर ज्यादा ध्यान देने की ज़रूरत नहीं है। इसका मतलब बिल्कुल वही है जो यह कहता है। फिर भी, चोरी के लिए इब्रानी शब्द, **गणब**, अपने साथ चोरी का विचार भी रखता है छिपकलीपन। तो यहाँ विचार यह है कि किसी ऐसी चीज़ को प्राप्त करना जो आपके अधिकार में नहीं है, उसे चुपके से या धोखे से प्राप्त करना उतना ही चोरी है जितना कि 7-11 में जाकर अपनी जेब में टिंकरी डालना। जाहिर है, उस खाने को अपनी जेब में रखना एक अपराध है, लेकिन परमेश्वर की अर्थव्यवस्था में धोखे से कुछ प्राप्त करना, भले ही वह तकनीकी रूप से कानूनी हो और इसलिए मुकदमा चलाने योग्य अपराध न हो, भी चोरी है।

पुनः पढ़ें निर्गमन 20:16

9वाँ वचन: अब, इसे अक्सर "झूठ मत बोलों" के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, और, निश्चित रूप से, वह इस आज्ञा के अर्थ का हिस्सा है, लेकिन, यह वचन कानूनी / न्यायिक अर्थ के साथ लिखा गया है, और मुख्य रूप से कानून की अदालत में किसी के खिलाफ झूठ बोलने के विचार को दर्शाता है, और यह तोरह, कानून के ढाँचे के साथ बहुत अच्छी तरह से फिट बैठता है। यानी, सभी प्राचीन इब्रानी संतों ने तोरह को परमेश्वर के न्याय के बारे में देखा। इसलिए, इस वचन का संदर्भ बहुत हद तक झूठी गवाही के समान है। यानी, अगर आप किसी मुकदमे में गलत जवाब देते हैं, या किसी पर झूठा आरोप लगाते हैं, यह अच्छी तरह जानते हुए कि आरोप सच नहीं है तो आप ही दोषी हैं।

जिस तरह हमें परमेश्वर का नाम इस्तेमाल करते समय बहुत सावधान रहना चाहिए, उसी तरह हमें दूसरों के बारे में जो कुछ भी कहना है, उसमें भी बहुत सावधान रहना चाहिए खास तौर पर अगर वह नकारात्मक प्रकृति का हो। जब हम गपशप करते हैं, या किसी पर ऐसी बात का आरोप लगाते हैं जिसके बारे में हमें पहले से कोई जानकारी नहीं है, तो हम इस 9वें वचन के सिद्धांत का उल्लंघन करने के खतरे में हैं।

पुनः पढ़ें निर्गमन 20:17

दसवाँ वचन है कि "तू अपने पड़ोसी के घर का लालच न करना", या उसकी पत्नी का या उसके नौकर का या उसके पशुओं का या किसी और चीज़ का जो उसकी हो। अब, साफ़ भाषा में, लालच करने का मतलब है किसी चीज़ को वाकई बुरी तरह से चाहना कि आप उसे पाने के लिए कुछ भी कर सकते हैं। या, कि किसी के पारा वह चीज़ है और आपके पास नहीं है, तो आपको इतनी ईर्ष्या होती है कि आप इसे बर्दाश्त ही नहीं कर पाते,

यह आपको कड़वा बना देता है। या, इससे भी ज़्यादा आम तौर पर, कि किसी के पास वह चीज़ है जो आपके पास नहीं है, यह आपके साथ **नाइंसाफी** है क्योंकि आप उससे ज़्यादा इसके हकदार हैं। अब, इस वचन में उन चीज़ों की सूची, जिनके लिए कोई लालच कर सकता है, जबकि पूरी तरह से शाब्दिक है। प्राचीन इब्रानी जीवन और संस्कृति के संदर्भ में भी बहुत कुछ है। इस्राएल जैसी जनजातीय संस्कृतियों में, किसी को पाने का ठेठ मूर्तिपूजक तरीका (जिससे वैसे तो यहोवा इस्राएल को दूर करने की कोशिश कर रहा था) किसी और की चीज़ छीन लेना था। आम तौर पर आप अपने कबीले के बाहर से किसी को लेते थे, लेकिन जरूरी नहीं कि ऐसा ही हो। दासों या पुरुष और दासियों का संदर्भ ज्यादातर संपत्ति और धन के बारे में होता है। नौकरों को आम तौर पर खरीदा जाता था, या वे स्वेच्छा से खुद को कुछ समय के लिए आपके पास गिरवी रख लेते थे (कभी-कभी उन्हें बंधुआ सेवक भी कहा जाता था), ताकि वे परिवार का कर्ज चुका सकें, या कोई व्यापार सीख सकें, या क्योंकि वे इतने गरीब थे कि यह उनके जीवित रहने के कुछ तरीकों में से एक था। लेकिन, किसी की पत्नी, बच्चों और दासों को ले जाना, उनका अपहरण करना भी आपके परिवार या कबीले के आकार को बढ़ाकर अपनी व्यक्तिगत शक्ति बढ़ाने का एक आम मूर्तिपूजक तरीका था। वैसे, यह प्रथा समाप्त नहीं हुई है। हम इसे आज भी अफ्रीका और एशिया की जनजातीय संस्कृतियों में मौजूद पाते हैं।

जानवरों का ज़िक्र फिर से धन के बारे में है। चूंकि इस्राएली मुख्य रूप से चरवाहे थे, इसलिए अब जानवर उनके पास मौजूद धन का प्रतिनिधित्व करते थे। आपके पास जितने ज़्यादा जानवर होते, आप उतने ही ज़्यादा अमीर होते।

और, इन 30 लाख भटकते हुए इब्रानियों के प्रति पूरी निष्पक्षता से कहें तो, उनके पास दिन-रात अपने विचारों को व्यस्त रखने के लिए और क्या था, सिवाय इसके कि वे वह चाहते थे जो किसी और के पास हो सकता है, जो उनके पास नहीं है? हर दिन सामान बाँधकर नहीं घूमते थे। माउंट सिनाई के बाद वे बस कुछ ही बार और आगे बढ़े। जंगल में अपने 40 वर्षों के दौरान, वे कई महीनों तक एक ही स्थान पर रहे, जब तक कि चारागाह या पानी खत्म नहीं हो गया, या परमेश्वर के निर्देश पर वे चले गए। एक बार बस जाने के बाद, उनके पास बस बैठने और सोचने के लिए बहुत सारे खाली घंटे होते और, लोग तो इंसान ही होते हैं, खासकर जब उनकी स्थिति से असंतुष्टि बढ़ती जाती है, तो बंजर रेगिस्तान में उनके पास और क्या चाहिए, सिवाय इसके कि उनके पड़ोसियों में से किसी के पास क्या है? हम अच्छी तरह से जानते हैं, या कम से कम हमें यह जानना चाहिए, कि एक कल्याणकारी रामाज में, जहाँ बहुत अधिक आलस्य है, दूसरों की चीज़ों का लालच करना एक राष्ट्रीय शगल बन गया है।

खैर 10 वचनों पर हमारी नजर पूरी हो गई है, जो 10 **सिद्धांत** हैं जिनके आधार पर परमेश्वर मानवजाति को दिए जाने वाले सभी बाकी आदेश और निर्देश देगा। तो यह बस आने वाली चीज़ों के लिए तैयारी है।

निर्गमन 20:15–23 को पुनः पढ़ें (कुछ बाइबिलों में यह 18–26 हो सकता है)

इस्राएल के लिए यह कैसा दिन था। मन को झकझोर देने वाली भौतिक घटनाएँ जो पहाड़ को हिला रही थीं, उसके शिखर से ऊपर की ओर उठता धुआँ, यहोवा की आवाज़ की गड़गड़ाहट की ध्वनि जब वह अपने न्याय

प्रणाली के सिद्धांतों को सभी इस्राएलियों के सामने प्रस्तुत कर रहा था, और घाटी के तल से गूंजते शॉफर के स्वर, इन सभी ने लोगों में परमेश्वर के प्रति श्रद्धा का भाव भर दिया। क्या ऐसा हो सकता है कि जिस तरह पतरस को लगा कि वह संभवतः परमेश्वर की उपस्थिति में खड़ा नहीं हो सकता जब उसने अंततः समझ लिया कि यीशु कौन है तो इब्रानियों के साथ भी ऐसा ही हुआ कि उनके पैर मुश्किल से उन्हें इतना लंबा खड़ा रख पाए कि वे पवित्र पर्वत से दूर जा सकें?

इसलिए, लोगों ने मूसा से उनके लिए परमेश्वर से बात करने के लिए कहा और परमेश्वर से मूसा से बात करने के लिए कहा, और फिर मूसा ने उन्हें बताया कि परमेश्वर ने क्या कहा था। दुर्भाग्य से, यह पूरी तरह से आध्यात्मिक 'डर नहीं था जिसके कारण उन्होंने मूसा से हस्तक्षेप करने के लिए कहा और मूसा ने तुरंत इसे पहचान लिया और लोगों को 17 वें पद में डरने के लिए नहीं कहा, क्योंकि यहोवा शक्ति और महिमा के इस अद्भुत प्रदर्शन में उनके पास आने के तीन कारण थे, 1) उन्हें परखने या परीक्षा करने के लिए इस्राएल को परखने के लिए। वहाँ परीक्षण के लिए इब्रानी शब्द नाका है, और यह इब्री लोगों को यहोवा की न्याय प्रणाली की वस्तु के रूप में दर्शाता है। हम 'परीक्षण किए जाने' या "परीक्षण" वाक्यांश की मानसिक तस्वीर को बहुत अधिक परमेश्वर द्वारा हमारे मार्ग में डाली गई चुनौतियों या बाधाओं की एक श्रृंखला के रूप में देखते हैं, यह देखते हुए कि हम उन पर कैसे प्रतिक्रिया करते हैं, और फिर, हम कैसे करते हैं, इसके आधार पर हमारा न्याय किया जाता है। जबकि, कभी-कभी हमारे जीवन में चुनौतियाँ और कठिनाइयाँ होती हैं जिनका सामना यहोवा हमें करने देता है, यह इस विचार का प्राथमिक जोर नहीं है, बल्कि, यह है कि प्रभु अपने लोगों को न्याय का मार्ग लगातार सिखा रहे हैं। इसे कैसे जीना है और इसे कैसे लागू करना है। दूसरा कारण यह है कि लोगों में परमेश्वर के प्रति भय होना चाहिए, परमेश्वर से डरना नहीं। विचार यह है कि परमेश्वर की पवित्रता के प्रति श्रद्धा होनी चाहिए। जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं, उन्हें परमेश्वर से कभी भी भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन जो लोग परमेश्वर से प्रेम नहीं करते, उन्हें निश्चित रूप से डरना चाहिए और, तीसरा यह कि इब्रानियों को पाप न करना सीखना चाहिए।

परमेश्वर ने अभी-अभी उन्हें जो 10 वचन दिए हैं और 600 से ज़्यादा "नियमों की आने वाली श्रृंखला के ज़रिए लोगों को सिखा रहा है कि उसका पवित्र स्वभाव क्या है, न्याय और धार्मिकता का उसका मानक क्या है सिर्फ इसलिए नहीं कि वे अपने मूर्तिपूजक पड़ोसियों की तरह जीवन के बारे में एक दर्शन विकसित कर सकें, या धार्मिक सिद्धांत बना सकें, या इसके बारे में बौद्धिक चर्चा कर सकें। बल्कि, इसलिए कि जिन लोगों को उसने अपने लिए अलग किया है, वे उस परम पवित्र व्यक्ति का अपमान न करें, उसके विरुद्ध अपराध न करें, जो अपनी कृपा के अनुसार अलग करता है।

इसके बाद, यहोवा ने मूसा से लोगों को याद दिलाने के लिए कहा (और सच कहूँ तो मुझे लगता है कि यह भविष्य की पीढ़ियों के लाभ के लिए था, न कि वहाँ मौजूद लोगों के लिए) कि यह परमेश्वर ही था जिसने ये शब्द कहे थे, न कि केवल मूसा से। सभी ने इसे सुना। यह सबसे सार्वजनिक रूप से किया गया था ताकि कोई संदेह न रहे कि यह परमेश्वर का तरीका था, न कि मूसा का।

ऐसा लगता है कि यहोवा एक बार फिर "अन्य देवताओं" के विषय को संबोधित कर रहा है, और मूर्तियों बना रहा है। क्या वह सिर्फ अपने आप को दोहरा रहा है, दूसरी आज्ञा को दोहरा रहा है? मुझे ऐसा नहीं लगता। दूसरी आज्ञा वचन में निश्चित रूप से कहा गया है कि कोई "अन्य देवता नहीं", लेकिन फिर प्रतीकों और छवियों और चित्रणों को बनाने की बात की गई यह इस मामले पर सबसे शुरुआती इब्रानी विचार के साथ बहुत अच्छी तरह से मेल खाता है, और जंगल के तम्बू के निर्माण में इसकी पुष्टि हुई की कोई छवि बनाने का निर्देश नहीं दिया था। और निश्चित रूप से कोई भी नहीं बनाया गया था।

और वह अपने व्यक्तित्व का एक और महत्वपूर्ण सिद्धांत स्थापित करता है। यहोवा तय करेगा कि उसके लिए वेदियाँ कहाँ बनाई जाएँगी और उन्हें कैसे बनाया जाएगा। वेदी का सिर्फ एक ही उद्देश्य है बलिदान। वेदी कोई साधारण स्मारक किसी व्यक्ति या घटना की याद नहीं है। यह कोई मंच नहीं है जहाँ कोई बोलता है या प्रदर्शन करता है। चाहे मूर्तिपूजक हो या परमेश्वरीय, वेदी एक ऐसी जगह है जहाँ किसी देवता की पूजा की जाती है और उस देवता के लिए बलिदान चढ़ाया जाता है और जहाँ भी परमेश्वर तय करते हैं कि वेदी रखी जानी चाहिए, वहाँ, संभवतः उचित बलिदान के साथ, परमेश्वर अपने लोगों को आशीर्वाद देंगे। लेकिन केवल वहाँ, न कि किसी भी जगह जिसे लोग चुनें, और वह नहीं चाहता कि वेदी स्थल भव्य तरीके से बनाया जाए क्योंकि हम सभी गहराई से समझते हैं कि जब हम यहोवा के लिए शानदार इमारतें बनाने का प्रयास करते हैं तो वास्तव में क्या होता है हम अपने लिए शानदार इमारतें बनाते हैं। अपने स्वयं के प्रयास अपनी खुद की प्रतिभा और उपहार अपनी खुद की समृद्धि हमारे आस पास जो हमें खुश करते हैं। यहोवा यहाँ कहता है कि बलिदान के लिए बस कुछ मिट्टी इकट्ठा करें और वह इस्राएलियों को अनुमति देता है कि वे चाहें तो पत्थर की वेदी बना सकते हैं। लेकिन यह बस पत्थरों को ढेर करके रखना चाहिए जैसे वे उन्हें जमीन से उठाते हैं क्योंकि उस चट्टान को प्राकृतिक रूप से बेहतर बनाने के लिए उस पर कोई औजार ले जाना, परमेश्वर की नज़र में, उस वेदी को अपवित्र करता है। खैर, अगर कभी परमेश्वर की ओर से कोई निर्देश था जिसे इब्रानी और ईसाई दोनों ने अनदेखा किया है, तो वह यह है, क्या हम यहोवा के लिए सबसे अद्भुत, शानदार गिरजाघर, चर्च और आराधनालय नहीं बनाते हैं हम उन्हें बेहतरीन सामग्रियों से सजाते हैं और उन्हें बेदाग रखने की पूरी कोशिश करते हैं, और आइए हम जंगल में बने तम्बू को, जो महँगी सामग्रियों से बनाया गया था, और बाद में मंदिर (जो कि तम्बू का स्थायी संस्करण था) को, उस चीज़ से भ्रमित न करें जिसके बारे में परमेश्वर यहाँ बात कर रहा है। तम्बू को एक शिक्षण उपकरण और एक जगह के रूप में बनाया गया था जहाँ परमेश्वर मनुष्य के साथ रहता था। तम्बू के बारे में हर चीज़ का बहुत महत्व होगा, भविष्यवाणी का महत्व.... यह कुछ मायनों में यहोवा के स्वर्गीय निवास के अनुरूप भी था। हमारे दिनों में, परमेश्वर अब पत्थर और लकड़ी और सोने और चाँदी के मंदिर नहीं चाहता। हम उसके मंदिर हैं। जैसे कि निर्गमन में वह यहाँ बलिदान के लिए ज़मीन की मूल चाहता था, वैसे ही वह जमीन की साधारण धूल चाहता है जिससे हम बनाए गए थे, वह जगह जहाँ उसकी आत्मा मनुष्य के साथ रहती है। वे स्थान जहाँ हम संगति और सामुदायिक पूजा करने के लिए इकट्ठा होते हैं, वे आधुनिक समय के तम्बू या मंदिर के समतुल्य नहीं हैं। परमेश्वर तो चाहते ही नहीं थे कि एक स्थायी मंदिर बनाया जाए उन्होंने ऐसा सिर्फ इसलिए किया क्योंकि राजा दाऊद बहुत आग्रही थे कि वे एक मंदिर बनाएँ। नहीं, मुझे लगता है कि मैं स्पष्ट रूप से कह सकता हूँ कि

यहोवा चाहता है कि हम उसकी सेवा भव्य इमारतों के बजाय अपनी आज्ञाकारिता से करें, कि हम सुंदर इमारतों को बनाने और बनाए रखने में लगने वाले सारे पैसे और समय का इस्तेमाल भूखों को खाना खिलाने, बीमारों को ठीक करने, अपने लोगों इस्त्राएल को आशीर्वाद देने और सुसमाचार को दुनिया तक पहुँचाने के लिए करें।